सूखी डाली

श्री उपेंद्र्‌ नाथ अश्क

सारांश:- श्री उपेन्द्र्‌ नाथ अश्क्जी की एकांकी संग्रह “चरवाहे का अंतिम एकांकी सूखी डाली है। सूखी डाली में अत्यंत तीव्रता पुरक आज के व्यक्ति ,परिवार समाज में व्यापक रुप में व्याप्त अंतर्द्वंद्वों संघर्ष को उदघाटित किया गया है । वट वृक्ष की छाया बहुत स्थाथी और सुखद होती है। कहा जाता है कि उसमें मौसम के अनुसार सुखदेने की क्षमता होती है यदि वट वृक्ष की डाली सूख जाती है,तब वह निरर्थक और सौंदर्य रहित होता है।

सुखी डाली एकांकी में घर के बुजुर्ग दादा वटवृक्ष के समान है। उनकी छत्र छाया में पले हुए बडे परिवार के भीतर अंत:बाह्य संघर्ष का तुफान मचा है। लेकिन दादा अपनी बुद्दिमत्ता से उसे आसानी से सुलझा देते है। दादा के छोटे पोते परेश का तह्सील दार बनना दादा के लिए फक्र की बात है ता, दूसरी ओर छोटी पतोहू- का सूरक्षित होना उनके परिवार के लिए संकट भी उपस्थित हो गया है क्योंकि- उनके घर में बडी भभी, मँझली भाभी और छोटी भाभी कहलानेवाली महिलाएँ सीधी-सादी है। उन सब में उनकी पोती इंदु जो प्राइमरी तक शिक्षा प्राप्त की है, वही घर में सबसे ज्यादा पढ़ी लिखी समझी जाती है । दादा उसे बहुत प्यार करते हैं । बेला के ग्रजुएट होने से दादा की पोती और अन्य महिलाओं के बीच अंतर पैदा होता है । वे सभी बेला के बर्ताव में कसर ढ़ूँढ़ने लगते हैं । बेला भी सभी विषय में अपने मायके की तुलना करते हुए मायके की प्रशंशा करती रहती है । ससुराल के हर चीज में वह कोई न कोई कसर ढ़ूँढती रहती है, जो घरवालों और उसके पति को भी अच्छा नही लगता है। बेला आजादी चाहती है। उसे अपने जीवन में दूसरों का हस्तक्षेप, दूसरों की आलोचना पसंद नही । वह समझती है कि घर के सभी सदस्य उसका अनादर कर रहे हैं और उसे घर का काम करना पडता है।

परेश से बातचीत करने के बाद उस समस्या का सुलझान का विश्वास परेश को देते हैं। बेला के अलावा परिवार के सभी सदस्यों को बुलाकर समझाते हैं कि वे सभी बेला के काम को भी आपस में बाँटकर कर लें और उसे अधिक समय पढ़ने लिखने के लिए मिल जाय । सभी उसका आदर सत्कार करें । अंत में दादाजी कहते हैं कि –“यह कुटुंब एक महान वृक्ष है । हम सब इसकी डालियाँ हैं । डालियों की वजह से पेड है और डालियाँ छोटी हो या बडी सब उसकी छाया को बढ़ाती है। मैं नही चाहता कि कोई डाली इससे अलग हो जाय । तुम लोग हमेशा मेरा कहा मानते आये हो । बस यही बात कहना चाहता हूँ.......यदि मैंने सुन लिया —किसीने छोटी बहू का निरादर किया है, उसकी हँसी उडायी है या उसका समय नष्ट किया है तो इस घर से मेरा नाता सदा के लिए टूट जाये--- अब तुम जा सकते हो।

दादाजी का कहना सभी मान लेते हैं। अब बेला के हिस्से के काम को भी घर के दूसरे सदस्य आपस में बाँटकर करने लगे। यदि वह उनके पास बातचीत करने के लिए भी आए तो उटकर उसे बैटने का आसन देते और उसका आदर सत्कार करतें। उसके हिस्से के काम को भी घर के दूसरे सदस्य मिलझुलकर करते तो बेला को भी बुरा लगने लगा। अब वह अपनी गलती को सुधारना चाहती है। दादाजी के कपडे इंदु के साथ मिलकर धोने लगती है । दादाजी उसे बाहर बुलाते हैं तो इंदु कहने लगती है कि-“मैंने बहुत बार भाभी को

मना किया फ़िर भी वह ना मानी । तब बेला दादा से कहती है कि-“ दादाजी आप पेड से किसी डाली को टूटकर अलग होना पसंद नही करते पर क्या आप यह चाहेंगे कि पेड से लगी वह डाल सूखकर मुरझा जाए.... बेला का गला भर आता है। अब वह भी अपनी गलती को सुधारकर घर के सभी लोगों के साथ मिलझुलकर खुश रहना चाहती है । इस एकांकी में दादाजी वटवृक्ष के समान अपने परिवार की रक्षा करते है और परिवार के बँट जाने से बचाते हैं।

विशेषता :- यह एक आदर्श एकांकी है, जो आज भी समसामयिक है । संयुक्त परिवार में जो मज़ा मिलता है, वह विभक्त परिवार में नही मिलता है। बच्चों का दादाजी से कहानी सुनना और बच्चों की मस्ती पर डाँटना भी सुंदर ढंग से दर्शाया गया है। बेला के काम को घर के सदस्यों का आपस में बाँट लेना और बेला भी अपने आप को बदलकर घर के सदस्यों के साथ स्नेह, विश्वास स्थापित करना भी बहुत ही महत्वपूर्ण अंश है। व्यक्ति के लिए स्वातंत्र्य जितना अनिवार्य है, उतना ही कभी कभी घातक भी।

संदर्भ के लिए व्याख्या :-

१. मैंने भी कह दिया, “क्या बात है भाभी तुम्हारे मायके की ? एक नमूना तुम्ही जो हो। एक मिश्रानी और ले आती तो हम गँवार भी उससे कुछ सीख लेते”।

२. क्यों इंदु बेटी, क्या बात हुई-यह रजवा रो रही है, कोई कडवी बात कह दी छोटी बहू ने इसे?

३. मैं क्या करु, मैं हँसी के मारे मर जाऊँगी, छोटी माँ! अभी- अभी छोटी बहू ने परेश की वह गत बनायी। बेचारा अपना –सा मुहँ ले कर दादाजी के पास भाग गया ।

४ क्यों! उसके हाथ नमक-मिट्टी के हैं जो गल जायेंगे ?

५.आओ बेटा परेश, वह मैंने एक दो कपडे भेजे थे न, तनिक देखना बहू ने उन्हें धो डाला है या नहीं । धो डाले हों तो ले आओ जरा । फ़िर मैं तुम से बात करुँगा ।

६. दादाजी, आप पेड से किसी डाली का टूट कर अलग होना पसंद नही करते, पर क्या आप यह चाहेंगे कि पेड से लगी-लगी वह डाल सूखकर मुरझा जाये...